OM-22 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/02/2021 5:07 PM Page 11

परमात्मा का पता...सिर्फ उसी को पता

कहते हैं, पते का सही पता हो तो किस्मत के पत्ते खुल जाते और पता सही न हो या पता ही न हो तो पत्ता ही कट जाता। व्यक्ति अपने पते का सही पता स्वयं ही जानता है। कोई दूसरा व्यक्ति उस पते को ऊपर-नीचे ज़रूर कर देगा! इसी तरह परमपिता के पते का सही पता तो वे स्वयं ही बता सकते हैं। जब इंसान को परमात्मा का ही पता नहीं तो वो परमात्मा का पता कैसे बतायेगा!

किसी को संदेश भेजना हो, तो उसके लिए पता चाहिए, लिफाफे पर पता होने से ही उस व्यक्ति को संदेश मिल पाएगा। लक्ष्यविहीन मानव शायद इसलिए परेशान है क्योंकि उसे न खुद का पता और न ही दुनिया में सुख-शांति का। मानव की मनोदशा भी उस बिना पते के लिफाफे की तरह है, जिन्हें नहीं पता कि उसे जाना कहाँ है। शारीरिक घर का पता तो मिला, लेकिन स्थानीय पता और स्थायी पता, दोनों चाहिए ना! आपको पता हो कि स्थायी पते से ही हम स्थायी महसूस करते। आज मन स्थायी नहीं है, तन भी स्थायी नहीं है क्योंकि स्थायित्व देने वाला कोई नहीं है। संसार में आज अबूझ पहेली के रूप में सबका जीवन है, सब हैं लेकिन अधर में। इधर-उधर जा तो रहे हैं लेकिन जिसकी तलाश है, उसका पता नहीं है।

ना होने से डर है कि क्या होगा, कैसे आगे का जीवन चलेगा! इस उहापोह की स्थिति में हमारा जनजीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त है। अपनी सुरक्षा, परिवार की सुरक्षा को लेकर चिंतित होना स्वाभाविक स्थिति है। कोई समाधान नहीं है, ऐसा लगता है। लेकिन उसी में एक उम्मीद की किरण नज़र आती है कि कहीं तो परमात्मा होंगे! उनका पता इस दुनिया में तो नहीं होगा, क्योंकि वो सुप्रीम है, उस सुप्रीम को पहचानने के लिए सुप्रीम सोच हो तो उनके पते का पता चले! वो है इन तत्वों से बाद की सोच, परे की सोच वाले। जो तत्वों के बारे में सोचता है, वो कभी भी उसे पहचान ही नहीं सकता। ऋषि-मुनि, तपस्वियों ने तपस्या की फिर भी उनका पता पाने में असमर्थ रहे। तभी तो वे भी हमें बता नहीं पाए, बस कहा... नेती-नेती, उनके आदि-अंत को कोई जान नहीं सकता, उनकी लीला अपरम्पार है आदि-आदि। आज स्वयं वही आकर हमें अपना पता बता रहे हैं कि जान लो मैं कौन हूँ और कहाँ रहता हूँ, लेकिन उस स्वरूप को सिर्फ हम तब जानेंगे, जब हम इससे थोड़ा बाहर निकलेंगे क्योंकि वो सुप्रीम हैं, उनका परम आवास-निवास, परमधाम ब्रह्माण्ड में है, जिसे सभी ब्रह्ममहतत्व कहते हैं, वही है उस परमपिता का सही पता।

उड़ती-उड़ती खबर हमारे कानों में पड़ी कि कहीं पर कोई एक ऐसा आध्यात्मिक आंगन है जहाँ पर बहुत सारे फरिश्तों की सभा लगती है। सभी चल रहे हैं लेकिन इतना सन्नाटा है या कहें इतना साइलेंस है कि बस उसमें खो जाने का मन होता है। माहौल इतना दिव्य है कि उस दिव्यता में हम सब भी लगता है पावन हो रहे हैं। सबका चाल-चलन व्यवहार इस दुनिया से बिल्कुल अलग, बिल्कुल नया, पूछा उनसे... कि ये सब कुछ आप कैसे करते हैं? तो जवाब मिला... हमें तो एक शक्ति है जो पढ़ाती है, मार्ग दर्शन देती है, वो ही चलाती है, वो ही खिलाती है। हमने पूछा, वो कहाँ है? तो कहते, वो दिखाई तो नहीं देती, लेकिन हम उसे महसूस करते हैं। इस चमन को हरा-भरा करने में और उसे वो रुहानियत प्रदान करने में उस परम पवित्र, निराकार परमपिता का ही हाथ है। इस बगिया के फूल बनने के लिए हम सबने छोटा-सा त्याग किया। लेकिन सही मायने में वो त्याग, त्याग नहीं है, वो परमात्मा का प्यार है जो हमको खींच कर ले आया। जब उस शक्ति का पता हमें चला तो हम सब उससे जुड़ गये। उलझन तो थोड़ी-सी सुलझी, लेकिन अभी भी प्रश्नों की एक लड़ी अंदर पड़ी थी। दुबारा पूछा, वो शक्ति कैसे आती है, कहाँ रहती है, कैसे आपको पता चला, तो जवाब दुबारा फिर से मिला, कि वो तो सुप्रीम है, वो असीम है, वो आनंद के सागर हैं, वो ब्रह्मतत्व में रहने वाले हैं, वो इन पाँच तत्वों के देह से देखे नहीं जा सकते।

कैसे विश्वास हो कि ये वही हैं?

उन्होंने कहा कि विश्वास करने का सरल तरीका है उन महावाक्यों को, उन बातों को दुनिया के पैरामीटर पर रख कर देखो। आपको अंतर नज़र आ जायेगा।

यहाँ जो कुछ या कोई भी है वो हमें इनमें फंसाने की बात करते हैं, इन तत्वों में फंसने की बात करते हैं। लेकिन परमपिता सुख का तरीका बताते और दुःख का कारण बताते। दुःख का कारण बताया, देह में फंसना और देह अभिमान को छोड़ना सुख का आधार है। ये किसी ने इस दुनिया में हमें नहीं बताया, इसलिए हमें विश्वास है कि वो परमपिता हैं। आत्मा का स्वरूप बताया, आत्मा का गुण बताया, सुख आत्मा के अंदर है ये बताया। इस दुनिया में सबने तत्वों से जुड़कर सुख लेने की बात कही जो दुःखदायी है, ये आपको भी पता है।

सुख चीज़ों में नहीं है, लोगों में नहीं है, सुख जो ले रहा है उसके अंदर ही सुख है, ये सिर्फ परमात्मा ने ही हमको बताया और ये वही बता सकता है जो बंधनमुक्त है। यहाँ पर हमें रहना है, चीज़ों को यूज़ करना है और छोड़कर चले जाना है। सुख-शांति आत्मा की नेचर है, बाहर की चीज़ यूज़ करने के लिए है,फंसने के लिए नहीं। आप ये अनुभव कर लो, आपको पता चल जायेगा।

मुम्बई-मालाड। फ्लेमिंगो सोसायटी द्वारा गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ध्वजारोहण करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीरजा, बिल्डिंग सेक्रेट्री हरिशंकर सिंह तथा अन्य।

जमशेदपुर-मेरिन ड्राइव(झारखण्ड)। ब्रह्मा बाबा के 52वें पुण्य स्मृति दिवस पर जमशेदपुर ब्लड बैंक के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'रक्तदान शिविर' का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष दिनेश कुमार को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. अन्नपूर्णा दीदी तथा डॉ. राजीव।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। समाजसेवा के क्षेत्र में विभिन्न कार्यों जैसे बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ, वृक्षारोपण, रक्त दान शिविर तथा कोरोना काल में की गई सेवाओं के लिए 72वें गणतंत्र दिवस पर राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. वसुधा को स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए जिला उपायुक्त राजेश जोगपाल,आई.ए.एस.। साथ हैं जिला पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार,आई.पी.एस. तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारीगण।

सेन्धवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व मृदा दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक चंद्रभागा किराडे,पानसेमल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया। उपस्थित रहे सुभाष रावत,एग्रीकल्चर डेवलपमेंट ऑफिसर, जगदीश सोलंकी,पूर्व सरपंच एवं ग्राम प्रमुख, ब्र.कु. साधना, राकेश ठाकुर व सहायक सचिव।